



परीक्षा-गुरु प्रकरण-२०

कृतज्ञता

हिन्दी
ADDA

परीक्षा-गुरु प्रकरण - २०

कृतज्ञता

तृणहु उतारे जनगनत कोटि मुहर उपकार

प्राण दियेहू दुष्टजन करत बै र व्यवहार।।

भोजप्रबंधसार.

लाला ब्रजकिशोर मदनमोहन के पास सै उठकर घर को जानें लगे उस्समय उन्का मन मदनमोहन की दशा देखकर दुःख सै बिबस हुआ जाता था. वह बारम्बार सोचते थे कि मदनमोहन नें केवल अपना ही नुकसान नहीं किया अपनै बाल बच्चों का हक

भी डबो दिया. मदनमोहन नें केवल अपनी पूंजी ही नहीं खोई अपने ऊपर कर्ज भी कर लिया.

भला ! लाला मदनमोहनको कर्ज करने की क्या ज़रूरत थी ? जो यह पहलै ही सै प्रबंध करने की रीति जान्कर तत्काल अपने आमद खर्च का बंदोबस्त कर लेते तो इन्को क्या, इन्के बेटे पोतों को भी तंगी उठाने की कुछ ज़रूरत न थी. मैं आप तकलीफ़ सै रहने को, निर्लज्जता सै रहने को, बदइन्तज़ामी सै रहने को, अथवा किसी हक़दार के हक़ में कमी करने को पसंद नहीं करता, परन्तु इन्को तो इन्बातों के लिये उद्योग करने की भी कुछ ज़रूरत न थी. यह तो अपनी आमदनी का बंदोबस्त करके असल पूंजी के हाथ लगाए बिना अमीरी ठाठ सै उमरभर चैन कर सकते थे. बिदुरजी नें कहा है "फल अपक्क जो बृक्ष ते तोर लेत नर कोय।। फल को रस पावै नहीं नास बीजको होय।। नासबीज को होय यहै निज चित्त विचारै।। पके, पके फललेई समय परिपाक निहारै।।पके, पके फललेई स्वाद रस लहै बुद्धिबल।। फलते पावै बीज, बीजते होइ बहुरिफल।।" यह उपदेश सब नीतिका सार है परन्तु जहां मालिक को अनुभव न हो, निकटवर्ती स्वार्थपर हों वहां यह बात कैसे हो सकती है ? "जैसे माली बाग को राखत हितचित चाहि।। तैसे जो कोला करत कहा दरद है ताहि ?"

लाला मदनमोहन अबतक कर्जदारी की दुर्दशा का बृतान्त नहीं जान्ते.

जिस्समय कर्जदार वादे पर रुपया नहीं दे सकता उसी समय सै लेनदार को अपने कर्ज के अनुसार कर्जदार की जायदाद और स्वतन्त्रता पर अधिकार हो जाता है. वह कर्जदार को कठोर से कठोर वाक्य "बेईमान" कह सकता है, रस्ता चलते में उस्का हाथ पकड़ सकता है. यह कैसी लज्जा की बात है कि एक मनुष्य को देखते ही डर के मारे छाती धड़कनें लगे और शर्म के मारे आंखें नीची हो जायें, सब लोग लाला मदनमोहन की तरह फ़िजूल खर्ची और झूठी ठसक दिखाने में बरबाद नहीं होते सौ में दो, एक समझवार भी किसीका काम बिगड़ जाने सै, या किसी की जामनी कर देने सै या किसी और उचित कारण सै इस आफ़त में फंस जाते हैं परन्तु बहुधा लोग अमीरों की सी ठसक दिखानेमें और अपने बूते सै बढ़कर चलने में कर्जदार होते हैं.

कर्जदारी में सबसै बड़ा दोष यह है कि जो मनुष्य, धर्मात्मा होता है वह भी कर्जमें फंसकर लाचारी सै अधर्म की राह चलने लगता है. जब सै कर्ज लेने की इच्छा होती है तब ही सै कर्ज लेनेवाले को ललचाने, ओर अपनी साहूकारी दिखाने के लिये तरह,

तरह की बनावट की जाती हैं. एकबार कर्ज लिये पीछे कर्ज लेने का चस्का पड़ जाता है और समय पर कर्ज नहीं चुका सकता तब लेनदार को धीर्य देने और उसकी दृष्टि में साहूकार दीखने के लिये ज्यादा: ज्यादा: कर्ज में जकड़ता जाता है और लेनदार का कड़ा तकाजा हुआ तो उसका कर्ज चुकाने के लिये अधर्म करने की रुचि हो जाती है. कर्जदार झूठ बोलने से नहीं डरता और झूठ बोले पीछे उसकी साख नहीं रहती. वह अपने बाल बच्चों के हक में दुश्मन से अधिक बुराई करता है. मित्रों को तरह, तरह की जोखों में फंसाता है अपनी घड़ी भर की मौज के लिये आप जन्मभर के बंधन में पड़ता है और अपनी अनुचित इच्छा को सजीवन करने के लिये आप मर मिटता है.

बहुत से अबिचारी लोग कर्ज चुकाने की अपेक्षा उदारता को अधिक समझते हैं. इस्का कारण यह है कि उदारता से यश मिलता है, लोग जगह, जगह उदार मनुष्य की बड़ाई करते फिरते हैं परन्तु कर्ज चुकाना केवल इन्साफ़ है इसलिये उसकी तारीफ़ कोई नहीं करता. इन्साफ़ को लोग साधारण नैकी समझते हैं, इस कारण उसकी निस्बत उदारता की ज्यादा: कदर करते हैं जो बहुधा स्वभाव की तेजी और अभिमान से प्रगट होती है परन्तु बुद्धिमानी से कुछ सम्बन्ध नहीं रखती. किसी उदार मनुष्य से उसका नौकर जाकर कहैकि फलाना लेनदार अपने रुपेका तकाजा करने आया है और आप के फलाने गरीब मित्र अपने निर्बाह के लिये आप की सहायता चाहते हैं तो वह उदार मनुष्य तत्काल कह देगा कि लेनदार को टाल दो और उस गरीब को रुपे देदो क्योंकि लेनदार का क्या ? वह तो अपने लेने लेता इस्के देने से वाह वाह होगी.

परन्तु इन्साफ़ का अर्थ लोग अच्छी तरह नहीं समझते क्योंकि जिस्के लिये जो करना चाहिए वह करना इन्साफ़ है इसलिये इन्साफ़ में सब नैकियें आगईं. इन्साफ़ का काम वह है जिस्में ईश्वर की तरफ़ का कर्तव्य, संसार की तरफ़ का कर्तव्य, और अपनी आत्मा की तरफ़ का कर्तव्य अच्छी तरह सम्पन्न होता हो. इन्साफ़ सब नैकियों की जड़ है और सब नैकियां उसकी शाखा-प्रशाखा हैं इन्साफ़ की सहायता बिना कोई बात मध्यम भाव से न होगी तो सरलता अविवेक, बहादुरी, दुराग्रह, परोपकार, अन्समझी और उदारता फिजूलखर्ची हो जायँगी.

कोई स्वार्थ रहित काम इन्साफ़ के साथ न किया जाय तो उसकी सूरत ही बदल जाती है और उसका परिणाम बहुधा भयंकर होता है. सिवाय की रकम में से अच्छे कामों में लगाए पीछे कुछ रुपया बचै और वो निर्दोष दिल्लगी की बातों में खर्च किया जाय तो उसको कोई अनुचित नहीं बता सकता परन्तु कर्तव्य कामों को अटका कर दिल्लगी की बातों में रुपया या समय खर्च करना अभी अच्छा नहीं हो सकता. अपने

बूते मूजब उचित रीति सै औरों की सहायता करनी मनुष्य का फर्ज है परन्तु इस्का यह अर्थ नहीं है कि अपने मन की अनुचित इच्छाओं को पूरा करने का उपाय करे अथवा ऐसी उदारता पर कमर बांधे कि आगे को अपना कर्तव्य सम्पादन करने के लिये और किसी अच्छे काम में खर्च करने के लिये अपने पास फूटी कौड़ी न बचे बल्कि सिवाय में कर्ज होजाय.

अफसोस ! लाला मदनमोहन की इस्समय ऐसी ही दशा हो रही है. इन्पर चारों तरफ़ सै आफत के बादल उमड़े चले आते हैं परन्तु इन्हें कुछ खबर नहीं है

विदुर जी नें सच कहा है :-

"बुद्धिभ्रंशते लहत बिनासहि।।ताहि अनीति नीतिसी भासहि।।"

इस तरह सै अनेक प्रकार के सोच बिचार में डूबे हुए लाला ब्रजकिशोर अपने मकान पर पहुंचे परन्तु उनके चित्त को किसी बात सै जरा भी धैर्य न हुआ.

लाला ब्रजकिशोर कठिन सै कठिन समय में अपने मन को स्थिर रख सकते थे परन्तु इस्समय उन्का चित्त ठिकानें न था. उन्नें यह काम अच्छा किया कि बुरा किया ? इस बात का निश्चय वह आप नही कर सकते थे. वह कहते थे कि इस दशा में मदनमोहन का काम बहुत दिन नहीं चलेगा और उस्समय ये सब रुपे के मित्र मदनमोहन को छोड़कर अपने, अपने रस्ते लेगेंगे परन्तु में क्या करूँ ? मुझको कोई रास्ता नहीं दिखाई देता और इस्समय मुझ सै मदनमोहन की कुछ सहायता न हो सकी तो मैंने संसार में जन्म लेकर क्या किया ?

फ्रांस के चौथे हेन्री नें डी ला ट्रेमाइल को देशनिकाला दिया था और काउन्ट डी आविग्नी उस्सै मेल रखता था. इस्पर एक दिन चौथे हेन्री नें डी आविग्नी सै कहा कि "तुम अबतक डी ला ट्रेमाइल की मित्रता कैसे नहीं छोड़ते ?" डी आविग्नी नें जवाब दिया कि मैं ऐसी हालत में उस्की मित्रता नहीं छोड़ सकता क्योंकि मेरी मित्रता के उपयोग करने का काम तो उस्को अभी पड़ा है."

पृथ्वीराज महोबेकी लड़ाई में बहुत घायल होकर मुर्दों के शामिल पड़े थे और संजमराय भी उन्के बराबर उसी दशा में पड़ा था. उस्समय एक गिद्ध आके पृथ्वीराज की आंख निकालने लगा. पृथ्वीराज को उस्के रोकने की सामर्थ्य न थी इसपर संजमराय पृथ्वीराजको बचाने के लिये अपने शरीर का माँस काट, काट कर

गिद्धके आगे फैकनें लगा जिस्सै पृथ्वीराजकी आंखें बच गईं और थोड़ी देर में चन्द वगैर आ पहुंचें.

हेन्री रिचमन्ड, पीटरके भय सै ब्रीटनी छोड़ कर फ्रान्सको भागनें लगा उस्समय उस्के सेवक सीमारनें उस्के वस्त्र पहन कर उस्की जोखों अपनें सिर ली और उस्को साफ निकाल दिया.

क्या इस्सतरहसै मैं मदनमोहन की कुछ सहायता इस्समय नहीं कर सकता ! यदि हम इस काम में मेरी जान भी जाती रहै तो कुछ चिन्ता नहीं. जब मैं उन्को अनसमझ जान कर उन्के कहनें सै उन्हें छोड़ आया तो मैंनें कौन्सी बुद्धिमानी की ? पर मैं रह कर क्या करता ? हां मैं हां मिला कर रहना रोगी को कुपथ्य देनें सै कम न था और ऐसे अवसर पर उन्का नुकसान देख कर चुप हो रहना भी स्वार्थपरता सै क्या कम था ? मेरा बिचार सदेव सै यह रहता है कि काम रहता तो विधि पूर्वक करना. न होसके तो चुप हो रहना, बेगार तक को बेगार न समझना परन्तु वहां तो मेरे वाजबी कहनें सै उल्टा असर होता था और दिनपर दिन जिद बढ़ती जाती थी. मैंनें बहुत धैर्य सै उन्को राह पर लाने के उपाय किये पर उन्नें किसी हालत में अपनी हद्द सै आगे बढ़ना मंजूर न किया.

असल तो ये है कि अब मदनमोहन बच्चे नहीं रहे. उन्की उम्रपक गई. किसी का दबाब उन्पर नहीं रहा, लोगोंनें हां मैं हां मिला कर उन्की भूलों को और दृढ़ कर दिया. रुपे के कारण उन्को अपनी भूलों का फल मिला और संसारके दुःख सुखका अनुभव न होनें पाया बस रंग पक्का हो गया. बिदुरजी कहते हैं कि "सन्त असन्त तपस्वी चोर। पापी सुकृति हृदय कठोर।। तैसो होय बसे जिहि संग। जैसो होत बसन मिल रंग।।"

यदि सावधान हों तो अंगद हनुमान की तरह उन्की आज्ञा पालन करनें में सब कर्तव्य संपादन हो जाते हैं परन्तु जहां ऐसा होता वहीं बड़ी कठिनाई पड़ती है. सकड़ी गली में हाथी नहीं चलता तब महावत कूढ़ बाजता है. वृन्द कहता है कि "ताकों त्यों समझाइये जो समझे जिहिं बानि।। बैन कहत मग अन्धकों अरु बहरेको पानि।।" जिस तरह सुग्रीव भोग विलास में फंस गया तब रघुनाथ जी केवल उस्को धमकी देकर राह पर ले आए थे इस तरह लाला मदनमोहन के लिये क्या कोई उपाय नहीं होसक्ता ? हे जगदीश ! इस कठिन काम में तू मेरी सहायता कर.

लाला ब्रजकिशोर इन्बातों के बिचार में ऐसे डूबे हुए थे कि उन्को अपना देहानुसन्धान न था. एक बार वह सहसा कलम उठा कर कुछ लिखनें लगे और किसी जगह को पूरा

<https://www.hindiadda.com/pareeksha-guru-part-xx-krtagyata/>

महसूल देकर एक जरूरी तार तत्काल भेज दिया. परन्तु फिर उन्हीं बातों के सोच बिचार में मग्न होगए. इस्समय उन्के मुखसै अनायास कोई, कोई शब्द बेजोड़ निकल जाते थे जिन्का अर्थ कुछ समझ में नहीं आता था. एक बार उन्नें कहा "तुलसीदासजी सच कहते हैं " षटरस बहु प्रकार ब्यंजन कोउ दिन अरु रैन बखानें।। बिन बोले सन्तोष जनित सुख खाय सोई पै जानें।।" थोड़ी देर पीछे कहा "मुझको इस्समय इस बचन पर बरताव रखना पड़ेगा (वृन्द) झूटहु ऐसो बोलिये सांच बराबर होय।। जो अंगुरी सों भीत पर चन्द्र दिखावे कोए।।" परन्तु पानी जैसा दूध सै मिल जाता है तेल सै नहीं मिलता.

विक्रमोर्बशी नाटक में उर्वशी के मुख सै सच्ची प्रीति के कारण पुरुषोत्तम की जगह पुरुरवा का नाम निकल गया था इसी तरह मेरे मुख सै कुछका कुछ निकल गया तो क्या होगा ? थोड़ी देर पीछे कहा "लोक निन्दा सै डरना तो वृथा है जब वह लोग जगत जननी जनक नन्दिनी की झूटी निन्दा किये बिना नहीं रहे ! श्रीकृष्णचन्द्र को जाति वालों के अपवाद का उपाय नारदजी सै पूछना पड़ा ! तो हम जैसे तुच्छ मनुष्यों की क्या गिन्ती है ? सादीनें लिखा है "एक विद्वान सै पूछा गया था कि कोई मनुष्य ऐसा होगा जो किसी रूपवान सुन्दरी के साथ एकांत में बैठा हो दरवाजा बन्द हो, पहरे वाला सोता हो मन ललचा रहा हो काम प्रबल हो और वह अपने शम दम के बल सै निर्दोष बच सकै ?" उसनें कहा कि "हां वह रूपवान सुन्दरी सै बच सकता है परन्तु निन्दकों की निन्दा सै नहीं बच सकता" फिर लोक निन्दा के भय सै अपना कर्तव्य न करना बड़ी भूल है धर्म औरों के लिये नहीं अपने लिये और अपने लिये भी फल की इच्छा सै नहीं, अपना कर्तव्य पूरा करने के लिये करना चाहिये परन्तु धर्म अधर्म होजाय, नैकी करते बुराई पल्ले पड़े, औरों को निकालती बार आप गोता खानें लगे तो कैसा हो ?

रूपेका लालच बड़ा प्रबल है और निर्धनोंको तो उन्के काम निकालने की चाबी होने के कारण बहुत ही ललचाता है" थोड़ी देर पीछे कहा "हलधरदास ने कहा है "बिन काले मुख नहि पलाश को अरुणाई है।। बिन बूड़े न समुद्र काहु मुक्ता पाई है।।" इसी तरह गोल्ड स्मिथ कहता है कि "साहस किये बिना अलभ्य वस्तु हाथ नहीं लग सकती" इसलिये ऐसे साहसी कामों में अपनी नीयत अच्छी रखनी चाहिये यदि अपनी नीयत अच्छी होगी तो ईश्वर अवश्य सहायता करेगा और डूब भी जायेंगे तो अपनी स्वरूप हानि न होगी."



परीक्षा-गुरु – Pariksha Guru

परीक्षा गुरु हिन्दी का प्रथम उपन्यास था जिसकी रचना भारतेन्दु युग के प्रसिद्ध नाटककार लाला श्रीनिवास दास ने 25 नवम्बर, 1882 को की थी।

परीक्षा गुरु पहला आधुनिक हिन्दी उपन्यास था। इसने संपन्न परिवारों के युवकों को बुरी संगति के खतरनाक प्रभाव और इसके परिणामस्वरूप ढीली नैतिकता के प्रति आगाह किया। परीक्षा गुरु नए उभरते मध्यम वर्ग की आंतरिक और बाहरी दुनिया को दर्शाता है। पात्र अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखते हुए औपनिवेशिक समाज के अनुकूल होने की कठिनाई में फस जाते हैं। हालांकि यह जाहिर तौर पर विशुद्ध रूप से 'पढ़ने के आनंद' के लिए लिखा गया था। औपनिवेशिक आधुनिकता की दुनिया भयावह और अप्रतिरोध्य दोनों लगती है।

उपन्यास पाठक को जीने का 'सही तरीका' सिखाने की कोशिश करता है और सभी समझदार पुरुषों से सांसारिक बुद्धिमान और व्यावहारिक होने, अपनी परंपरा और संस्कृति के मूल्यों में निहित रहने और सम्मान और सम्मान के साथ जीने की उम्मीद करता है। पात्र अपने कार्यों के माध्यम से दो अलग-अलग दुनियाओं को जोड़ने का प्रयास करते हैं; वे नई कृषि प्रौद्योगिकी को अपनाते हैं, व्यापारिक प्रथाओं का आधुनिकीकरण करते हैं, भारतीय भाषाओं के उपयोग को बदलते हैं जिससे वे पश्चिमी विज्ञान और भारतीय ज्ञान दोनों को अपनाने में सक्षम हो जाते हैं। युवाओं से समाचार पत्र पढ़ने की स्वस्थ आदत विकसित करने का आग्रह किया जाता है। यह सब पारंपरिक मूल्यों का त्याग किए बिना हासिल किया जाना चाहिए।

इस उपन्यास उपन्यास 41 छोटे-छोटे प्रकरणों में विभक्त है। कथा तेजी से आगे बढ़ती है और अंत तक रोचकता बनी रहती है। पूरा उपन्यास नीतिपरक और उपदेशात्मक है। उसमें जगह-जगह इंग्लैंड और यूनान के इतिहास से दृष्टांत दिए गए हैं। ये दृष्टांत मुख्यतः ब्रजकिशोर के कथनों में आते हैं। इनसे उपन्यास के ये स्थल आजकल के पाठकों को बोझिल लगते हैं। उपन्यास में बीच-बीच में संस्कृत, हिन्दी, फारसी के ग्रंथों के ढेर सारे उद्धरण भी ब्रज भाषा में काव्यानुवाद के रूप में दिए गए हैं। हर प्रकरण के प्रारंभ में भी ऐसा एक उद्धरण है। उन दिनों काव्य और गद्य की भाषा अलग-अलग थी। काव्य के लिए ब्रज भाषा का प्रयोग होता था और गद्य के लिए खड़ी बोली का। लेखक ने इसी परिपाटी का अनुसरण करते हुए उपन्यास के काव्यांशों के लिए ब्रज भाषा चुना है।

<https://www.hindiadda.com/pareeksha-guru-part-xx-krtagyata/>

परीक्षा-गुरु - Pariksha Guru in Hindi

1. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१ सौदागरकी दुकान
2. परीक्षा-गुरु प्रकरण-२ अकालमें अधिकमास
3. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३ संगतिका फल
4. परीक्षा-गुरु प्रकरण-४ मित्रमिलाप
5. परीक्षा-गुरु प्रकरण-५ विषयासक्त
6. परीक्षा-गुरु प्रकरण-६ भले बुरे की पहचान
7. परीक्षा-गुरु प्रकरण – ७ सावधानी (होशयारी)
8. परीक्षा-गुरु प्रकरण-८ सबमें हां
9. परीक्षा-गुरु प्रकरण-९ सभासद
10. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१० प्रबन्ध (इन्तजाम)
11. परीक्षा-गुरु प्रकरण-११ सज्जनता
12. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१२ सुख दुःख
13. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१३ बिगाड़का मूल- बिवाद
14. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१४ पत्रव्यवहा
15. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१५ प्रिय अथवा पिय ?
- 16.
17. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१६ सुरा (शराब)
18. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१७ स्वतन्त्रता और स्वेच्छाचार.
19. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१८ क्षमा
20. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१९ स्वतन्त्रता
21. परीक्षा-गुरु प्रकरण – २० कृतज्ञता
22. परीक्षा-गुरु प्रकरण-२१ पति ब्रता
23. परीक्षा-गुरु प्रकरण-२२ संशय
24. परीक्षा-गुरु प्रकरण-२३ प्रामाणिकता
25. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२४ (हाथसै पै दा करने वाले) (और पोतड़ों के अमीर)
26. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२५ साहसी पुरुष
27. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२६ दिवाला
28. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२७ लोक चर्चा (अफवाह).
29. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२८ फूट का काला मुंह
30. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२९ बात चीत.
31. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३० नै राश्य (नाउम्मेदी).
32. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३१ चालाक की चूक
33. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३२ अदालत
34. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३३ मित्रपरीक्षा
35. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३४ हीनप्रभा (बदरोबी)
36. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३५ स्तुति निन्दा का भेद
37. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३६ धोके की टट्टी
38. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३७ बिपत्तमें धैर्य
39. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३८ सच्ची प्रीति
40. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३९ प्रेत भय
41. परीक्षा-गुरु प्रकरण ४० सुधारने की रीति
42. परीक्षा-गुरु प्रकरण ४१ सुखकी परमावधि

